विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

कोड न.: 102

हिन्दू अध्ययन

इकाई-1 : तत्त्व विमर्श

1. ''हिन्दू'' शब्द-बोध (ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं जीवन-दृष्टिपरक)।
2. अष्टादश विद्याएँ, उपांग तथा प्रमुख आचार्य।
3. विभिन्न परम्पराओं में पदार्थ/तत्त्व और इनमें अन्तर्निहित एकसूत्रता।
4. स्त्री-विमर्श : समानान्तर सम्प्रभुता के सिद्धान्त।

   (क) आत्माभिव्यक्तियाँ : वाक् सूक्त, देव्यथर्वशीर्ष सूक्त तथा भगवद्गीता (10.20.40)।

   (ख) अर्धनारीश्वर-अवधारणा (बृहदारण्यक उपनिषद् 1.4.3)
5. शक्ति तथा प्रकृति तत्त्व।
6. जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन, और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में स्त्री-विमर्श।
7. वेदान्त में एकात्मता तथा जैन, बौद्ध, न्याय-वैशेषिक दर्शनों और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में अंतःसम्बद्धता तथा सर्वसमावेशिता का परिणामी विचार।
8. वर्ण (बृहदारण्यक उपनिषद् 1/4/10-15, भगवद्गीता 18/41-45), जाति और 'कास्ट' (caste) के बीच अन्तर।
9. विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमियों के ऋषियों और संतों की गणना।

इकाई -2 : धर्म तथा कर्म विमर्श

1. धर्म : परिभाषाएँ और अर्थ (महाभारत, मनुस्मृति, वैशेषिक सूत्र, गीता-शांकरभाष्य-उपोद्घात एवं श्रमण परम्पराओं में परिभाषाएँ)।
2. धर्म तथा 'Religion' (पन्थ, मजहब) के बीच अन्तर।
3. धर्म के प्रकार : प्रवृत्तिमूलक, निवृत्तिमूलक।
4. धर्म : वैदिक तथा श्रमण परम्पराओं एवं श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में संयोजक सिद्धांत।
5. वर्णाश्रम धर्म और चयन का अधिकार।
6. राज-धर्म, आपद्-धर्म, समाज-धर्म तथा स्व-धर्म।
7. कर्म, विकर्म, तथा अकर्म (भगवद्गीता 4.16 तथा उस पर शांकरभाष्य)।
8. षड्विध कर्म : नित्य, नैमित्तिक, प्रायश्चित्त, उपासना, काम्य तथा निषिद्ध।
9. निष्काम तथा सकाम कर्म।
10. कर्म, फल, प्रारब्ध तथा संस्कार।

इकाई -3 : पुनर्जन्म-बन्धन-मोक्ष विमर्श

1. जीव की अवधारणा।
2. बन्धन की परिभाषाएँ (प्राकृतिक, वैकृतिक, दाक्षिणक- सांख्यकारिका 44 एवं उस पर सांख्यतत्त्वकौमुदी)।
3. बन्धन का मूल कारण और इसकी प्रक्रिया: (भगवद्गीता 3.37-41, 2.62-66), प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धान्त।
4. धर्म का प्रेरकतत्त्व पुनर्जन्म।
5. मोक्ष और निर्वाण की संकल्पनाएँ।
6. मोक्ष प्राप्ति के विविध मार्ग (योग) : अभ्यास, कर्म, भक्ति, ज्ञान।

इकाई -4 : प्रमाणसिद्धान्त

1. प्रमाण की परिभाषा।
2. शास्त्र-विश्लेषण की भारतीय पद्धति : प्रमाता, प्रमाण, प्रमेय तथा प्रमा।
3. विभिन्न प्रकार के प्रमाणों की प्रकृति, परिभाषा, विधियाँ और सीमाएँ।
4. शब्दशक्ति-अभिधा, लक्षणा, व्यंजना और तात्पर्य ।
5. स्वतःप्रामाण्य और परतःप्रामाण्य ।
6. समसामयिक ग्रन्थों में प्रमाण के अनुप्रयोग ।

इकाई -5 : वाद-परम्परा

1. वाद-परम्पराः शास्त्रार्थ की विधि और अधिकरण की अवधारणा।
2. संशय से निर्णय ।
3. कथा (कथा की प्रकृति और प्रकार): वाद, जल्प, वितण्डा।
4. ज्ञान-अन्वेषण का आरम्भ : अनुबन्धचतुष्टय (अधिकारी, विषय, सम्बन्ध, प्रयोजन)।
5. ज्ञान का संगठन : सूत्र, भाष्य, वार्तिक, वृत्ति, टीका, टिप्पणी और संग्रह ।
6. श्रवण-विधि के द्वारा ज्ञान के 'तात्पर्य' का विश्लेषण करना - उपक्रम-उपसंहार, अभ्यास, अपूर्वता, फल, अर्थवाद तथा उपपत्ति ।
7. षड्विध तात्पर्य निर्णायकतत्त्व - श्रुति, लिंग, वाक्य, प्रकरण, स्थान और समाख्या ।
8. तन्त्रयुक्ति : आधुनिक विज्ञान के संदर्भ में शोधपद्धति।

इकाई -6 : भारतीय ग्रंथों को समझने के लिये पाश्चात्य विधियों की उपयुक्तता

1. स्वतंत्र शोध पर पाश्चात्य प्रतिबंधक तत्त्व।
2. भारत का पाश्चात्य जगत द्वारा चित्रण एवं पारम्परिक साहित्यिक सिद्धान्त।
3. मार्क्सवादी दृष्टिकोण एवं समालोचना-सिद्धांत पर आधारित हिन्दुओं एवं भारत की समझ।

   (क) रचयिता बनाम पाठक का आशय।

   (ख) समालोचनात्मक सिद्धान्त का इतिहास और उद्देश्य।
4. Hegemony (ग्रामशी)
5. संरचनावाद पर आधारित भारत का चित्रण
6. Orientalism - पाश्चात्य अनुभव एवं भारत का चित्रण
7. भारतीय परिपेक्ष्य में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पद्धति का उपयोग
8. उत्तर-आधुनिकतावाद एवं विखंडन (deconstruction) पर आधारित भारत का चित्रण।
9. New Historicism और तटस्थ अन्वेषण और भारत का चित्रण। ।

इकाई-7 : रामायण

1. दैवीय प्रेरणा से उत्पन्न पारम्परिक रामायण (वाल्मीकि रामायण), श्रद्धाकेन्द्रित रामायण (थाई रामायण आदि) तथा मूल कथानक से भिन्न रामकथाएँ।
2. रामायणों की लोकप्रियता और प्रासंगिकता।
3. समग्र भारतीय साहित्य तथा कलाओं (लोक, शास्त्रीय तथा समसामयिक कलाओं) का उपजीव्य (स्रोत ग्रन्थ) रामायण।
4. मर्यादापुरुषोत्तम राम
5. मानवीय सम्बन्ध एवं सामाजिक पुनः संरचना (निषादराज, जटायु आदि) एवं प्रकृति-मनुष्य सम्बन्ध।
6. स्त्री-विमर्श : अनसूया, अहिल्या, कैकेयी, कौशल्या, मंदोदरी, सीता, स्वयंप्रभा, तारा, त्रिजटा, उर्मिला, शबरी।
7. रामराज्य ।
8. समाज में ऋषि की भूमिका ।
9. भारत सम्बन्धी भौगोलिक, वानस्पतिक और जैविक सूचनाएँ।

इकाई-8 : महाभारत

1. महाभारत काल : शास्त्रीय, पारम्परिक तथा आधुनिक स्रोत। युधिष्ठिर संवत्, कृष्ण संवत् तथा विक्रम संवत्
2. महाभारत की मूलकथा।
3. धर्म और संसार : धर्म के 10 लक्षणों के बारे में 10 कहानियाँ : **धृति** (गंगाा अवतरण), **क्षमा** (वशिष्ठ और विश्वामित्र), **दम** (ययाति और पुरू), **अस्तेय** (युधिष्ठिर-यक्ष संवाद), **शौच** (स्वर्णिम नेवला की कथा), **इंद्रिय-निग्रह** (धर्म व्याध का उपदेश), **धीः** (सावित्री), **विद्या** (स्त्री पर्व में वर्णित मनुष्य-बाघ-सर्प-गज की कथा) **सत्य** (हरिश्चन्द्र/सत्यकाम) **अक्रोध** (परीक्षित तथा उनके द्वारा ऋषि शमिक के अपमान की कथा)।
4. समग्र भारतीय साहित्य तथा कलाओं (लोक, शास्त्रीय तथा समसामयिक कलाओं) का उपजीव्य (स्रोत ग्रंथ) महाभारत।
5. विदुरनीति और भगवद्गीता।
6. राजधर्म तथा राजनीति : शान्तिपर्व।
7. भारत-वर्ष का भूगोल ।
8. महाभारत में स्त्री विमर्श : द्रौपदी, गांधारी, हिडिम्बा, जाम्बवती, कुन्ती, माद्री, रुक्मिणी, सत्यभामा, सत्यवती, शिखण्डी, सुलोचना, उलूपी, उत्तरा।

इकाई-9 : संस्कृत परिचय

1. संस्कृतवर्णमालापरिचयः - चतुर्दश माहेश्वरसूत्राणि।
स्वरः, व्यञ्जनम्, संयुक्तवर्णाः, अनुस्वारः, अनुनासिकम्, विसर्ग, वर्णविन्यासः, वर्णसंयोगः, उच्चारणस्थानम्, लेखन-प्रक्रिया, शब्दपदयोर्मध्ये अन्तरम् ।

2- शब्दरूपम् (दैनिकप्रयोगदृष्ट्या आधारभूता शब्दरूपप्रक्रिया),विभक्तिः, कारकम्(अर्थसहितः सामान्यपरिचयः) -
2.1 शब्दरूपम् (संज्ञात्मकम्) - अन्तिमवर्णदृष्ट्या, लिप्रगदृष्ट्या वचनदृष्ट्या च वर्गीकरणम्।

शब्दाः (अजन्ताः/स्वरान्ताः)						
	अकारान्तः	इकारान्तः	उकारान्तः	ऋकारान्तः	आकारान्तः	ईकारान्तः
पुल्लिंगम्	देव, राम	कवि, हरि, पति	गुरु	पितृ, दातृ	-	-
स्त्रीलिंगम्	-	मति	धेनु	मातृ	लता	नदी
नपुंसकलिंगम्	फल	वारि	वस्तु	-	-	-

2.2 शब्दरूपम् (हलन्तम्/व्यञ्जनान्तम्)-

शब्दाः (हलन्ताः/व्यञ्जनान्ताः)	
पुंल्लिंगम्	भिषज् (भिषक्), महत्, सुहृद्, राजन्, विद्यार्थिन्, पथिन्, गच्छत् मरुत् आत्मन्, ब्रह्मन्, विद्वस्।
स्त्रीलिंगम्	वाच्, सरित्, दिश्, परिषद्, आशिष्, स्त्री, लक्ष्मी, श्री।
नपुंसकलिंगम्	जगत्, नामन्, कर्मन्, चक्षुष्, मनस्, हविष्, ब्रह्मन्, धनुष्, पयस्, दधि।
एतत्सदृशानाम् अन्येषाञ्च रूपाणाम् अभ्यासः।	

2.3 सर्वनाम- अस्मद्, युष्मद्; तद्, एतद्, यद्, भवत्, किम्, इदम्, अदस्, सर्व (त्रिषु लिङ्गेषु)।

3- धातुरूपम् (क्रियारूपम्)-
3.1 धातूनां गणपरिचयः, आत्मनेपदम्, परस्मैपदम्।
3.2 लकारदृशा - लट्लकारः (वर्तमानकालः), लुटलकारः (भविष्यत्कालः), लङ्लकारः (भूतकालः)
लोट्लकारः (आज्ञार्थकः), विधिलिङ्लकारः (सम्भावनायाम्)।
पुरुषदृशा - प्रथमपुरुषः, मध्यमपुरुषः, उत्तमपुरुषः।
वचनदृशा - एकवचनम्, द्विवचनम्, बहुवचनम्।
3.3 धातवः- पंचलकारेषु धातुरूपाणि -
परस्मैपदिनः- पठ्, लिख्, चल्, गम्, नम्, खाद्, वद्, हस्, गै, कृ, क्री, ज्ञा, घ्रा, नी, दृश्, धृ, पत्,
पा(पिब्), स्मृ, क्रुध्, शक्, पृच्छ्, इष (इच्छ्), दा, जीव्, त्यज्, धाव्, पच्, रक्ष्, सु, रुद्, भी, नश्, स्निह्, आप्, क्षिप्, जप्, विश्,
मिल्, ग्रह्, चिन्त्, पालु, रच्, क्षल्।
आत्मनेपदिनः-लभ्, मुद्, क्षम्, वृध्, सह्, सेव्, ईक्ष्, ऊह्, कम्प्, भाष्, यत्, रम्, वन्द्, याच्, शीङ्।
सत्तात्मकौ - अस्, भू।

4. सन्धिः - स्वरसन्धिः- यण्, अयादि, गुण, वृद्धि, दीर्घ, पूर्वरूप, पररूप, प्रकृतिभाव ।
व्यञ्जनसन्धिः- परसवर्णः, अनुनासिकः, श्चुत्वम्, ष्टुत्वम्, जश्त्वम्, चर्त्वम्, णत्व-षत्वविधिः।
विसर्गसन्धिः - विसर्गलोपः, विसर्गस्थाने ओ, र्, स्, श्, ष्।
अनुस्वारः, 'र्' 'लोपः, 'त्' स्थाने 'ल्' अनुनासिकम्।

5. समासः - केवलः, अव्ययीभावः, तत्पुरुषः, कर्मधारयः, द्विगुः, बहुव्रीहिः, द्वन्द्वः।

6. कारकम् - कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान (सम्बन्ध), अधिकरण, सम्बोधन ।

7- उपपदविभक्तिः -

- अधि, अनु, उप, उभयतः, परितः, निकषा, प्रति, धिक्, विना.....योगे द्वितीया।
- अलम्, विना, हीनम्, सह, साकम्, सार्धम्, समम्.....योगे तृतीया।
- नमः, रुच्, दा, स्पृहा, अलम् (सामर्थ्यार्थे).....चतुर्थी।
- विना, बहिः, परम्, पूर्वम्.....योगे पञ्चमी।
- अग्रतः, पुरतः, पृष्ठतः, वामतः, दक्षिणतः, उत्तरतः.....योगे षष्ठी।
- स्निह्, विश्वस्.....योगे सप्तमी।

8. वाच्यम्- कर्तृवाच्यम्, कर्मवाच्यम्, भाववाच्यम्।

9. प्रत्ययः- (क) कृत्प्रत्ययः - क्त, क्तवतु क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, शतृ, शानच्, ण्यत्, क्तिन्, ल्युट्, तव्यत्, अनीयर्, ण्वुल्, तृच्, घञ्।
(ख) तद्धितप्रत्ययः- मतुप्, वतुप्, इन्, ठक् (इक्), घञ्, त्व, तल्, अण्, ष्यञ्।
(ग) स्त्रीप्रत्ययः- ङीप्, ङीष्, टाप्।

10- अव्ययम्- (स्थानवाचि)-अत्र, तत्र, यत्र, सर्वत्र, अन्यत्र, कुत्र, एकत्र,यतः, ततः।
(समयवाचि)- यदा, तदा, सदा, सर्वदा, कदा, अद्य, श्वः, ह्यः,परश्वः,परह्यः,वारम्,आरभ्य,निश्चयेन, ।
(समुच्चयवाचि)- च, अपि, एव।
(अवस्थावाचि)- आम्, किम्, धन्यवादः, आवश्यकम्।
(दिशावाचि)- उपरतः, पृष्ठतः, वामतः, दक्षिणतः, अभितः, परितः।
(पूर्णतावाचि)- पर्याप्तम्, अत्यन्तम्, अलम्, इति।
(सम्भावनावाचि)- किन्तु, प्रायशः, अपेक्षया, अतः, यत्-तत्।
सादृश्यवाची अव्यय- इव, नु, वा, चित्।
अव्यय- क्त्वातोसुन्कसुनः, कृन्मेजन्तः, तद्धितश्चासर्वविभक्तिः

11. उपसर्गः - आ, उत्, अनु, वि, प्र, परि, अव, उप, सम्, अप।

12 संख्या - सङ्ख्यावाचि- शब्दरूपाणि एकः, द्वौ, त्रयः, चत्वारः (त्रिषु लिङ्गेषु)।
संख्याः - 5 - 100

इकाई-10 : अन्य सम्बद्ध विषय

1. अनुवाद में चुनौतियाँ तथा मूल एवं अनूदित ग्रन्थों के बीच विभेद : धर्म, सम्प्रदाय, आत्मा, दर्शन, ईश्वर, भगवान्, प्रभु, मन, बुद्धि, प्रामाणिक, शिष्य, देवता, मूर्ति, मन्दिर, अध्यात्म, प्रेम, असुर, दैत्य, राक्षस, शरीर, द्रव्य, राष्ट्र, वर्ण, जाति, शास्त्र, शान्ति, ऋषि, मुनि, गुरु, कला, शास्त्रीय संगीत, पण्डित, माया, स्त्री, महिला, नारी, न्याय, इंद्रिय, मोक्ष, निर्वाण, प्राण ।
2. महत्त्वपूर्ण मन्दिर, शक्तिपीठ, मठ, ज्योतिर्लिंग, धाम।
3. संत-परम्परा : चैतन्य महाप्रभु, शंकरदेव, तिरुवल्लुर, वसवन्ना, नामदेव, कबीर, रविदास, नरसी मेहता, गुरुनानक देव, तुकाराम, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आण्डाल, झूलेलाल, ज्ञानेश्वर, विद्यापति, नारायण गुरु।
4. नाट्य : दस प्रकार (दशरूपक)।
   नाट्य-तत्त्वः रस, अभिनय, कथावस्तु, पात्र।
5. काव्यः प्रकार (गद्य, पद्य, चम्पू), छन्द - अनुष्टुप्, उपजाति, इंद्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, वसंततिलका, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, आर्या, गाथा, दोहा, चौपाई और सोरठा।
6. महत्त्वपूर्ण कवि : भास, कालिदास, अश्वघोष, सोमदेव सूरि, हाल, कल्हण, चंदबरदाई
7. प्रमुख सम्राट् और राजवंश : मौर्य, ललितादित्य, चक्रध्वज सिंह, चोल, हरिहर और बुक्का, बप्पा रावल, हर्षवर्धन, भोज, दाहिर-सेन, मार्तण्ड वर्मा, राणा प्रताप, शिवाजी ।
8. उत्तर-पूर्वी प्रमुख जनजातियों (Jaintia, Adi, Galo, Tagin, Apatani, Idu Mishmi, Miju Mishmi, Digaru Mishmi) में ईश्वर की अवधारणा।